मंगलाष्टक

अन्वयार्थ सहित

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

साभार : स्तोत्र दर्पण

(शार्दूलविक्रीडित)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्रीसिद्धान्त–सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।1।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

: अन्वयार्थ :

इन्द्रमहिताः – इन्द्रों द्वारा पूजित, **अर्हन्तः भगवन्त** – अर्हन्त भगवान, **च** – और, **सिद्धीश्वराः**– सिद्धि के स्वामी, **सिद्धाः** – सिद्ध भगवान, **जिनशासनोन्नतिकराः** – जिनशासन को प्रकाशित करने वाले, **आचार्याः** – आचार्य परमेष्ठी, **श्री सिद्धान्तसुपाठकाः** – श्री सिद्धान्त को भली प्रकार से पढ़ाने वाले, **पूज्या उपाध्यायकाः** – पूज्य उपाध्याय परमेष्ठी, **रत्नत्रयाराधकाः** – रत्नत्रय के आराधक साधु परमेष्ठी, **एते पञ्च** – ये पाँच, **परमेष्ठिनः** परमेष्ठी, **प्रतिदिनं** – प्रतिदिन, **नो मंगलम्** – हम सबका मंगल, **कुर्वन्तु** – करें।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(शार्दूलविक्रीडित)

श्रीमन्नम्र – सुरासुरेन्द्र – मुकुट – प्रद्योत – रत्नप्रभा
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्ध–सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।2।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

: अन्वयार्थ :

श्रीमत् – लक्ष्मी से युक्त, **नम्र** – नम्रीभूत, **सुरासुरेन्द्र** – देवेन्द्रों और असुरेन्द्रों के, **मुकुट प्रद्योत** – मुकुटों के चमकदार, **रत्नप्रभा भास्वत्** – रत्नों की कान्ति से भास्वत (येन) जिनके, **पादनखेन्दवः** – चरणों के नखरूपी चन्द्रमा हैं, **प्रवचनाम्भो–धीन्दवः** – जो प्रवचन रूपी समुद्र को वृद्धिंगत करने के लिए चन्द्रमा के समान हैं। **स्थायिनः** – जो अपने स्वरूप में स्थित रहते हैं, **योगिजनैः स्तुत्या** – योगीजन जिनकी स्तुति करते हैं, **ये सर्वे** – ये सभी, **जिनसिद्ध** अर्हन्त, सिद्ध, **सूर्यनुगताः** – आचार्य सहित, **पाठकाः** – उपाध्याय और, **साधवः** – साधुजन, **नो मंगलम्** – तुम्हारा मंगल, **कुर्वन्तु** – करें।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(शार्दूलविक्रीडित)

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु नो मंगलम्।।3।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

: अन्वयार्थ :

अमलम् – निर्मल, **सम्यग्दर्शन** – सम्यग्दर्शन, **बोधवृत्तम्** – ज्ञान-चारित्र रूप, **रत्नत्रयं पावनम्** – पवित्र रत्नत्रय को, **मुक्तिश्री** – मुक्तिरूपी लक्ष्मी के, **नगराधिपति** – नगर के अधिपति, **जिनपति** – जिनेन्द्र देव ने, **अपवर्गप्रदः** – मोक्ष को देने वाला, **धर्मः उक्तः** – धर्म कहा है, **सूक्तिसुधा** – जिनागम, **अखिलं चैत्यम्** – समस्त जिन प्रतिमा और, **श्रयालयः चैत्यालयः** – लक्ष्मी का आकारभूत जिनमंदिर, **धर्मः त्रिविधम्** – धर्म तीन प्रकार का, **प्रोक्तम्** – कहा है, **च अमी** – और ये, **चतुर्विधम्** – चार प्रकार का धर्म, **नो मंगलम्** – हमारा मंगल, **कुर्वन्तु** – करे।

(शार्दूलविक्रीडित)

नाभेयादि जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णुप्रतिविष्णु लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।4।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

: अन्वयार्थ :

त्रिभुवनख्याताः – तीनों लोकों में विख्यात, **नाभेयादि** – ऋषभदेव आदि, **जिनाधिपाः** – जिनेन्द्र देव, **चतुर्विंशति** – चौबीस तीर्थंकर, **श्रीमन्तः** – लक्ष्मीमान, **यः** – जो, **भरतेश्वरप्रभृतयः** – भरतेश्वर आदि, **द्वादश चक्रिणः** – बारह चक्रवर्ती, **यः विष्णु** – जो नारायण, **प्रतिविष्णु** – प्रतिनारायण, **लाङ्गलधराः** – बलभद्र, **सप्तोत्तरा विंशतिः** – सात अधिक बीस अर्थात् सत्ताइस, **त्रैकाल्ये** – तीनों कालों में, **प्रथिताः** – विख्यात (मान्य), **त्रिषष्टिपुरुषाः** – श्रेषठ शलाका पुरुष, **नो मंगलम्** – हमारा मंगल, **कुर्वन्तु** – करें।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(शार्दूलविक्रीडित)

ये सर्वौषधऋद्धय: सुतपसो वृद्धिंगता पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणा: ।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वरा:,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृत: कुर्वन्तु ते मंगलम् ।।5।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्व: सर्वत्र नन्दतु

: अन्वयार्थ :

यः सुतपसः – जो अच्छे तप से, **वृद्धिंगताः** – वृद्धि को प्राप्त, **पञ्च** – पाँच, **सर्वोषध–ऋद्धयः** – सर्वौषधि ऋद्धियों के स्वामी, **च** – और, **यः अष्टांग** – जो अष्टांग, **महानिमित्त–कुशला** – महानिमित्तों में कुशल, **च अष्टौ** – और आठ, **वियच्चारिणः** – चारण ऋद्धियों के धारक, **पञ्च ज्ञानधराः** – पाँच प्रकार के ज्ञानधारी, **त्रयः अपि** – तीन प्रकार के, **बलिनः** – बल से युक्त, **यः बुद्धि ऋद्धीश्वराः** – जो बुद्धि ऋद्धीश्वर हैं, **ऐते सप्त** – ये सात, **सकलार्चिता मुनिवराः** – सभी के द्वारा पूजित श्रेष्ठ मुनिजन, **नो** – हमारा, **मंगलम्** – मंगल कुर्वन्तु करें।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(शार्दूलविक्रीडित)

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु नो मंगलम्॥6॥

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

: अन्वयार्थ :

वृषभस्य – ऋषभदेव की, **निर्वृतिमही** – निर्वाण भूमि, **कैलासे** –कैलास पर्वत पर, **वीरस्य** – महावीर स्वामी की, **पावापुरे** – पावापुर में है, **वसुपूज्य** –वासुपूज्य भगवान की, **चम्पायाम्** – चम्पापुर में है, **अर्हत:** – अर्हन्त, **नेमीश्वरस्य** –नेमीनाथ स्वामी की, **ऊर्जयन्तशिखरे** – ऊर्जयन्त पर्वत पर, **च** – और, **शेषाणामपि अर्हताम्** – शेष पूज्य तीर्थंकरों पर, **सम्मेदशैले** – सम्मेद शिखर पर, **प्रसिद्धविभवा:** – प्रसिद्ध है वैभव जिनका, **निर्वाणावनय:** – वे निर्वाण भूमियाँ, **नो** – हमारा, **मंगलम्** – मंगल, **कुर्वन्तु** – करें।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(शार्दूलविक्रीडित)

ज्योतिर्व्यन्तर–भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षार–रौप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु नो मंगलम्।।7।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

: अन्वयार्थ :

ज्योतिः – ज्योतिषी देव, **व्यन्तर** – व्यन्तर, **भावनामर** – भवनवासी और वैमानिकों के, **गृहे** – निवास स्थान में, **मेरौ** – मेरुओं में, **कुलाद्रौ स्थिताः** – कुलाचलों में स्थित, **जम्बू** – जम्बू वृक्षों में, **शाल्मलि** – शाल्मलि वृक्षों में, **चैत्यशाखिषु** – चैत्य वृक्षों की शाखाओं में, **तथा वक्षार** – तथा वक्षार गिरि, **रुप्याद्रिषु** – विजयार्द्ध गिरि, **इष्वाकार** – इष्वाकार पर्वत, **कुण्डलनगे** – कुण्डल पर्वत, **च नन्दीश्वरे द्वीपे** – और नन्दीश्वर द्वीप में, **यः मनुजोत्तरे** – जो मानुषोत्तर, **शैले** – पर्वत पर, **जिनगृहाः** – जिन चैत्यालय हैं वे, **नो** – हमारा **मंगलम्** – मंगल, **कुर्वन्तु** – करें।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(शार्दूलविक्रीडित)

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा सम्भावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।8।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

: अन्वयार्थ :

यः भगवताम् – जो तीर्थंकरों के, **गर्भावतरोत्सवः** – गर्भ कल्याणक के उत्सव, **जन्माभिषेकोत्सवः** – जन्म कल्याणक के उत्सव, **परिनिष्क्रमेण** – तप कल्याणक के उत्सव, **केवलज्ञानभाक्** – केवलज्ञान कल्याणक, **विभवः** – वैभव, (महोत्सव), **च** – और, **यः कैवल्यपुर** – जो कैवल्यपुर, **प्रवेशमहिमा** – प्रवेश की महिमा अर्थात् निर्वाण कल्याणक, **स्वर्गिभिः** – देवों द्वारा, **सम्भावितः जातः** – सम्पन्न किये गये, **तानि पञ्च** – वे पाँचों **कल्याणानि** – कल्याणक, **नो सततं** – हमारा हमेशा, **मंगलम्** – मंगल, **कुर्वन्तु** – करें।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(शार्दूलविक्रीडित)

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।9।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

: अन्वयार्थ :

इत्थम् – इस प्रकार सौभाग्य, **सम्पत्प्रदं** – सौभाग्यरूप सम्पत्ति के प्रदाता, **श्री जिनमंगलाष्टकम्** – श्री जिन मंगलाष्टक को, **सुधियः तीर्थंकराणाम्** – सुधी तीर्थंकरों के, **कल्याणेषु महोत्सवेषु** – कल्याणक महोत्सवों में और, **उषः** – प्रातःकाल, **यः** – जो, **शृण्वन्ति च पठन्ति** – सुनते और पढ़ते हैं, **तैः सुजनैः** – उन सज्जनों के द्वारा, **धर्मार्थकामान्विता** – धर्म, अर्थ और काम से सहित, **लक्ष्मीः आश्रयते** – लक्ष्मी प्राप्त की जाती है और, **व्ययायरहिता** – विनाश रहित अर्थात् अविनश्वर, **निर्वाणलक्ष्मीः**– मोक्ष–लक्ष्मी – **अपि आश्रयते** भी प्राप्त करते हैं।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु